प्राथमिक शिक्षा में उपचारात्मक शिक्षण : एक अध्ययन

❑ डॉ. एम.कुमार

यह अध्ययन 'उपचारात्मक शिक्षण' से संबंधित है । सभी जानते हैं कि 'उपचार' शब्द चिकित्सा विज्ञान में प्रयुक्त होता है। 'उपचारात्मक शिक्षण' पद विषय विशेष के शिक्षण में सीखने के दौरान पीछे रह जाने वाले छात्रों को सम्बलन प्रदान करने के लिए प्रयुक्त किया गया है। इस पद से यह आशयित होता है कि विषय-विशेष में सीखने में पीछे रह जाने वाले बच्चे 'बीमार' हैं और उन्हें 'उपचार' की आवश्यकता है । इस प्रकार शिक्षक को एक डाक्टर की भूमिका भी निभानी है। 'उपचारात्मक शिक्षण' न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) से संबंधित है बल्कि उसी की उपज (परिणिति) है। इसमें इस धारणा का निषेध करती है कि सभी बच्चों की क्षमताएं भिन्न होती हैं, फलत: उनके सीखने की गति समान नहीं होती । इसलिए बच्चों को उनकी सहज गति से सीखने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हम इस अध्ययन के प्रसंग से 'उपचारात्मक शिक्षण' पर शिक्षकों की प्रतिक्रियाएं आमंत्रित करते हैं।

अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने संबंधी संवैधानिक प्रतिबद्धता के अनुसरण में प्राथमिक शिक्षा का प्रसार एवं गुणवत्ता पठन-पाठन की प्रक्रिया पर निर्भर करती है । इस सन्दर्भ में कक्षा-कक्ष की पारस्परिक अन्त:क्रिया की गुणवत्ता सुधारने और इसे बालकेन्द्रित क्रिया प्रधान तथा रोचक बनाने के अनेक कार्यकलापों में उपचारात्मक शिक्षण भी शामिल है । इस शिक्षण में विद्यार्थी की सहभागिता और सक्रियता अधिक होती है और बालकेन्द्रित शिक्षा के सभी पहलुओं से संबंधित दक्षताओं का विकास होता है । प्रस्तुत लेख का उद्देश्य उपचारात्मक शिक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है ।

शिक्षा एक बहुमुखी प्रक्रिया है, अध्यापक का कार्य तब तक समाप्त नहीं होता जब तक उसे यह सन्तुष्टि न हो जाय कि उसका प्रत्येक विद्यार्थी सीख रहा है । अधिगम की सफलता ही उसके शिक्षण की सफलता है । शिक्षण एवं अधिगम की सफलता की जांच के लिए मूल्यांकन का सहारा लिया जाता है । मूल्यांकन शिक्षण अधिगम के दौरान चलने वाली एक सतत् प्रक्रिया है, जिसमें विकास के सभी पहलुओं यथा ज्ञान, कौशल, दक्षता (सामाजिक, नैतिक, भावात्मक) आदि का मूल्यांकन किया जाता है । प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर का निर्धारण किया गया है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक विद्यार्थी, चाहे वह देश के किसी भी क्षेत्र का हो, कक्षानुसार प्रत्येक विषय में निर्धारित दक्षताओं में पारंगतता प्राप्त कर सके, यह लक्ष्य रखा गया है । अंतत: शिक्षा की गुणवत्ता पठन-पाठन की प्रक्रिया के स्वरूप पर निर्भर करती है । इस संदर्भ में कक्षा-कक्ष की पारस्परिक अन्त: क्रिया की गुणवत्ता सुधारने में उपचारात्मक शिक्षण भी शामिल है। हालांकि उपचार शब्द चिकित्सा विज्ञान की देन है लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा में भी इसका काफी प्रयोग हो रहा है । उपचारात्मक शिक्षण के द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थी के सम्मुख आने वाली विषय वस्तु या उससे संबंधित कठिनाइयों का पता लगाकर समाधान करने का प्रयास किया जाता है, जिससे कि विद्यार्थी को शिक्षण प्रक्रिया में शत-प्रतिशत संप्राप्ति हो सके । प्रस्तुत शोधपत्र क्षेत्रीय संस्थान, अजमेर के डैमोस्ट्रेशन स्कूल में संचालित उपचारात्मक शिक्षण का अध्ययन करने का एक प्रयास है ।

अध्ययन का उद्देश्य :

- विद्यार्थियों में सुनकर समझने की दक्षता का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण के विकास की दक्षता का अध्ययन करना ।
- विद्यार्थियों में यातायात के नियमों के अनुपालन की दक्षता का अध्ययन करना ।
- विद्यार्थियों में वर्णन करने एवं पढ़ने की दक्षता के विकास का अध्ययन करना ।

प्रतिदर्श -

प्रस्तुत अध्ययन में अप्रायिकता प्रतिचयन विधि से 'सोद्देश्य' प्रतिदर्श का चयन किया गया है जिसमें क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अजमेर के डेमोस्ट्रेशन स्कूल में 'न्यूनतम अधिगम स्तर पर आधारित' कक्षा तीन की हिन्दी भाषा की कक्षा के सभी 32 विद्यार्थियों को लिया गया है ।

उपकरण -

प्रस्तुत अध्ययन में मानवीय उपकरण उपलब्ध न हो पाने के कारण, उपचारात्मक शिक्षण के विभिन्न स्तरीय विद्वानों के सहयोग से कक्षा-कक्ष अवलोकन अनुसूची का निर्माण कर उपयोग किया गया तथा डेमोस्ट्रेशन स्कूल अध्यापिका शिक्षण-पंजिका, छात्र उत्तर-पुस्तिका का भी सहयोग लिया गया है ।

तथ्य संकलन -

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य संकलन हेतु क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर के डेमोस्ट्रेशन स्कूल के प्रधानाध्यापक से अनुमति प्राप्त कर कक्षा अध्यापिका के सहयोग से उपचारात्मक शिक्षण की प्रभाविता को प्रस्तुत कर विषय-वस्तु विश्लेषण-विधि का उपयोग किया गया है ।

1. दक्षता -

वर्णन, चित्रण, शब्द, खेल एवं पहेलियों को सुनकर समझना।

शिक्षण -

विद्यार्थियों में यह दक्षता विकसित करने के लिए अध्यापिका छोटे-छोटे रोचक और सरल विवरण मौखिक व लिखित रूप से प्रस्तुत करती है । जैसे - गणतन्त्र दिवस के बारे में बताना । बाद में मूल्यांकन हेतु कुछ विद्यार्थियों से प्रश्न पूछती है, यथा-

1. गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है ?
2. लाल किले पर गणतन्त्र दिवस के दिन झण्डा कौन फहराता है ?
3. गणतन्त्र दिवस किस खुशी में मनाया जाता है ?

इन प्रश्नों के उत्तर कक्षा के सभी विद्यार्थियों में से 13 विद्यार्थी दे पाते हैं, शेष 19 विद्यार्थियों को उपचारात्मक शिक्षण दिया जाता है ।

उपचारात्मक शिक्षण -

अध्यापिका ने 19 विद्यार्थियों में उपचारात्मक शिक्षण के अन्तर्गत पहेलियां सुनने की रूचि उत्पन्न की तथा भाषा को समझने की शक्ति का विकास कराया । इसके लिए अध्यापिका ने पहेलियां बूझने का सहारा लिया, जैसे -

''हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जड़ी थी ।''

राजा जी के बाग में दुशाला ओढ़े खड़ी थी ।''

इसके बाद सभी विद्यार्थियों के पुनर्मूल्यांकन हेतु पहेली में ही अध्यापिका ने प्रश्न पूछा-

''पेड़ों से मुझे लाते हैं, कुर्सी मेज बनाते हैं ।

कोई-कोई मुझे जलाते हैं, बताओ मैं कौन हूं ।''

इस प्रश्न का उत्तर 18 विद्यार्थी दे देते हैं - लकड़ी ।

इस प्रकार अध्यापिका ने पाया कि शत-प्रतिशत विद्यार्थियों में दक्षता का विकास हो गया ।

2. दक्षता -

शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना ।

शिक्षण -

कक्षा में विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने की दक्षता का विकास करने के लिए अध्यापिका ने अनेक अवसर दिये। जैसे -विद्यार्थियों को पाठ या संवाद पढ़कर सुनाया तथा उन्हें उसका अभ्यास कराया । सामान्यत: देखा कि विद्यार्थी निम्न गल्तियां कर रहे हैं -

(क) मिली-जुली ध्वनियों (क,ख,ड़,ढ़, प,श,स, आदि) के उच्चारण में भेद न करना ।

(ख) चार-पांच अक्षर वाले शब्दों में उचित स्थान पर बल न देना, आसमान के स्थान पर असमान बोलना, तराजू के स्थान पर तराजु बोलना । गलत उच्चारण कर रहे सभी 6 विद्यार्थियों को उपचारात्मक शिक्षण दिया गया ।

उपचारात्मक शिक्षण -

विद्यार्थियों के उच्चारण के दोषों को नोट करके, कक्षा-कक्ष में सामूहिक रूप से एवं व्यक्तिगत स्तर पर शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया गया, मिलती-जुलती ध्वनियों के उच्चारण में भेद करना सिखाया गया । संयुक्ताक्षर आने पर उन्हें विशेष बल देकर बोलना सिखाया गया । जैसे - अच्छा, शब्द के उच्चारण में 'अच' एक साथ बोला गया और 'छा' अलग ।

इस प्रकार उपचारात्मक शिक्षण में गलत उच्चारण कर रहे सभी 6 विद्यार्थी भी सही उच्चारण करने लगे और विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण के साथ-साथ बोलने की दक्षता का भी विकास हुआ।

3. दक्षता - रास्ते पर चलने के संकेतों, विज्ञापन पट्टों एवं सरल सूचनाओं को पढ़ना ।

शिक्षण -

अध्यापिका ने इस दक्षता के विकास के लिए निम्न बातें पहले पढ़कर समझायीं -

1. रास्ते पर चलने के संकेतों को पढ़ना ।

2. विज्ञापन पट्‌टों पर लिखी सामग्री को पढ़ना ।

3. सरल सूचनाओं को पढ़ना ।

इसके पश्चात विद्यार्थियों को समझाया गया कि रास्ते पर चलने के संकेत दो प्रकार के होते हैं -

क. भाषा में लिखे हुए ।

ख. रेखाओं या चित्रों में बने हुए।

विद्यार्थियों को संकेतों के बारे में बताकर संकेतों का चार्ट लगाया गया तथा उसे विद्यार्थियों को दिखाया, जिसमें लिखा था - बांये चलिए, मोड़ पर गाड़ी की गति धीमी रखें। इस प्रकार विद्यार्थियों को रास्ते के नियमों (संकेतों) के बारे में समझाया गया तथा भविष्य में अपनाने के लिए कहा गया ।

कक्षा के सभी 32 विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु चिन्हों से संबंधित प्रश्न पूछ कर दक्षता की जांच की गयी, जिसमें 13 विद्यार्थियों को इस ज्ञान से वंचित पाया गया जिन्हें उपचारात्मक शिक्षण दिया गया ।

उपचारात्मक शिक्षण -

विद्यार्थियों को श्यामपट पर यातायात के सभी चिह्नों से परिचित करवाया गया । उदाहरणार्थ - दायें मोड़, बांये मोड़, तदुपरान्त विद्यार्थियों को समाचार पत्रों और विज्ञापनों को पढ़ना सिखाया गया, गल्तियां होने पर सही कराया और शुद्ध उच्चारण के साथ बोलने का अभ्यास कराया गया। चार्ट पर बने विज्ञापन पढ़वाकर मूल्यांकन किया गया, जिसमें उपचारात्मक शिक्षण पा रहे 13 विद्यार्थियों में से 11 विद्यार्थियों ने विज्ञापनों को पढ़ लिया ।

इस प्रकार अध्यापिका ने पाया कि उपचारात्मक शिक्षण के बाद विद्यार्थियों में इस दक्षता का विकास हुआ है ।

4. दक्षता -

परिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन करना ।

शिक्षण

कक्षा में से एक विद्यार्थी को अपने पास बुलाकर उससे अपने परिवार के विषय में कुछ वाक्य बोलने को कहा । पहले विद्यार्थी के बोलने के बाद कक्षा के किसी अन्य विद्यार्थी को पहले विद्यार्थी के बारे में बताने को कहा । उदाहरण -

प्रथम विद्यार्थी - मैं रामगंज में रहता हूं, मेरे दो भाई हैं । वे दुकान करते हैं, आदि ।

द्वितीय विद्यार्थी - मोहन रामगंज में रहता है । उसके दो भाई हैं । वे दुकान करते हैं । मोहन के पिताजी भी दुकान करते हैं, आदि।

इसी तरह विद्यार्थियों से मेले, घाट, किसी उत्सव त्यौहार का वर्णन करवाया गया, जिससे विद्यार्थियों में शब्दावली एवं कल्पनाशक्ति का विकास हो तथा उनकी झिझक दूर हो । यह प्रक्रिया बार-बार कक्षा में दोहरायी गयी।

विद्यार्थियों में दक्षता के विकास के मूल्यांकन हेतु निम्न वस्तुओं का वर्णन करने को कहा - गाय, कक्षा, कोई त्यौहार, मेला आदि । कक्षा के सभी 32 विद्यार्थियों में से 4 विद्यार्थी वर्णन नहीं कर सके, उन्हें उपचारात्मक शिक्षण दिया गया।

उपचारात्मक शिक्षण

विद्यार्थियों को परिचित विषय देकर उन्हें उसके बारे में बोलने को कहा गया । जैसे - मेरी कक्षा, मेरा गांव आदि । जहां विद्यार्थी इस प्रकार का वर्णन करते समय झिझक का अनुभव करते वहां स्वयं अध्यापिका ने उनकी बात आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया और अधूरे वाक्यों को पूरा कराया । यह प्रक्रिया बार-बार चलती रही ।

मूल्यांकन हेतु अध्यापिका ने निम्न में से एक का वर्णन करने को कहा - (क) मेरा मित्र (ख) विद्यालय । उपचारात्मक शिक्षण पाने वाले चारों विद्यार्थियों ने वर्णन किया । इस प्रकार परिचित वस्तुओं के विषय का वर्णन करने की दक्षता का विकास हुआ ।

5. दक्षता -

सरल कहानियों की पुस्तकें तथा अन्य बाल पुस्तकें पढ़ना ।

शिक्षण

अध्यापिका ने विद्यार्थियों को उनकी पाठ्य-पुस्तक में आयी कहानियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया तथा यह जानने के लिए कि पढ़कर उन्होंने कितना समझा, विद्यार्थियों से विषयवस्तु संबंधित प्रश्न पूछे। जैसे - पाठ-'लालच का फल' (बाल भारती भाग-3) पाठ पर आधारित प्रश्न पूछे -

(क) प्रजा के कष्टों को जानने के लिए राजा क्या करता था?

(ख) लड़की क्यों रो रही थी ?

इस प्रकार के अन्य पाठ पढ़वाकर कक्षा के सभी 32 विद्यार्थियों से प्रश्न पूछे, जिससे 6 विद्यार्थी पाठ संबंधी प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाये उन्हें उपचारात्मक शिक्षण दिया गया ।

उपचारात्मक शिक्षण -

अध्यापिका ने विद्यार्थियों में पढ़ने की क्षमता के विकास के

लिए पाठ्य-पुस्तक पढ़ने को प्रेरित किया, न पढ़ पाने पर उनको शब्दों की पहचान कराकर शब्द व वाक्यों को पढ़ना सिखाया तथा बाद में कहानी पढ़वायी, फिर कहानी से संबंधित प्रश्न पूछे, उत्तर न देने पर पुन: कहानी पढ़वायी । यह प्रक्रिया 2-3 बार की । इस प्रक्रिया में उपचारात्मक शिक्षण प्राप्त कर रहे 6 विद्यार्थियों में से 2 विद्यार्थी पढ़ना सीख गये, बाकी 4 नहीं सीख सके । इस प्रकार कक्षा के 32 विद्यार्थियों में से 28 विद्यार्थियों में दक्षता का विकास हो गया ।

उपचारात्मक शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बढ़ जाती है । उन्हें कार्य करने का अवसर मिलता है और बालकेन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य, विकास के सभी पहलुओं से संबंधित दक्षताओं के विकास की पूर्ति होती है । उपचारात्मक शिक्षण के प्रभाव को सारणी -1 से स्पष्टत: समझाया जा सकता है ।

सारणी 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दक्षता- 2 शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना एवं दक्षता - 4 परिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन करना में सभी विद्यार्थियों में दक्षता का विकास हुआ है जिन्हें उपचारात्मक शिक्षण प्रदान किया अर्थात इन दक्षताओं में शत-प्रतिशत उपचारात्मक शिक्षण प्रभावी है । केवल दक्षता - 3 और 5 ऐसी हैं जिनमें उपचारात्मक शिक्षण पाने के बाद कुछ विद्यार्थियों में दक्षता का विकास नहीं हो पाया, लेकिन ऐसे विद्यार्थियों की संख्या काफी कम है । इन विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से उपचारात्मक शिक्षण देकर दक्षताओं का विकास किया जा सकता है ।

अत: स्पष्ट है कि उपचारात्मक शिक्षण के परिणाम प्रभावी हैं और यह शिक्षण बाल केन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक है । इस शिक्षण में विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय रहने के अवसर उपलब्ध होते हैं ।

प्रत्येक विद्यार्थी का समान एवं समुचित विकास करने के लिए विद्यार्थियों के सामने कक्षा-कक्ष में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना तथा उन्हें दूर करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण, शिक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसके द्वारा विद्यार्थियों के विकास अथवा ज्ञानार्जन के कार्यों में आने वाली कठिनाइयों का निवारण कर प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता की समस्या का समाधान किया जा सकता है । विभिन्न राज्य सरकारों को चाहिए कि वे सरकारी, गैर सरकारी, मान्यता प्राप्त विद्यालयों में उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था को लागू करें। नि:सन्देह उपचारात्मक शिक्षण से विद्यार्थी व शिक्षक की प्रगति सुगम होगी, आत्म विश्वास का विकास होगा और शिक्षण अधिक प्रभावशाली एवं फलदायी होगा।◆

सारणी - 1

विभिन्न दक्षताओं में उपचारात्मक शिक्षण प्रभावकारिता की सारणी

क्रम	अध्ययन में सम्मिलित दक्षतायें	शिक्षण में सम्मिलित विद्यार्थियों की संख्या	उपचारात्मक शिक्षण दिये गये विद्यार्थियों की संख्या	उपचारात्मक शिक्षण में प्रभावित विद्यार्थियों की संख्या	प्रभावहीन विद्यार्थियों की संख्या
1	वर्णन, चित्रण, शब्द लेखन एवं पहेलियों को सुनकर समझना	32	19	18	1
2	शुद्ध उच्चारण के साथ बोलना	32	6	6	—
3	रास्ते पर चलने के संकेतों, विज्ञापन पट्टों एवं सरल सूचनाओं को पढ़ना	32	13	11	2
4	परिचित वस्तुओं के विषय में वर्णन करना	32	4	4	—
5	सरल कहानियों की पुस्तकें पढ़ना	32	6	2	4